दादा भगवान परिवार का

अप्रैल-२०२५

अक्रम एक्सप्रेस

आलस

संपादकीय

बालमित्रों,

किसी भी काम को निपटाने का सबसे आसान उपाय क्या हो सकता है? काम निपटाने की शुरुआत करना। कई बार हमें इतना ज्यादा आलस आता है कि काम की शुरुआत ही नहीं हो पाती। आलस के कारण हम एकदम आसान काम को भी मुश्किल बना देते हैं।

यह आलस है क्या? हमें आलस क्यों आता है? यदि आलस को भगाना हो तो? चलो, ज्ञानियों की समझ द्वारा इन प्रश्नों के जवाब प्राप्त करें। साथ ही, कहानियों की दुनिया में जाकर देखते हैं कि आलस के कारण 'फन फेर' में जिगर को क्या नुकसान हुआ। विन्की साइन्स मॉडल बना पाया या नहीं? और हाँ, आलू-चिली की लाइफ में आगे क्या हुआ यह पढ़ने में तो आलस करना ही मत!

- डिम्पल मेहता

अक्रम एक्सप्रेस

April, 2025
Year 13, Issue : 01
Conti. Issue No.: 145
Published Monthly

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला. गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोनः ९३२८६६११६६/७७
Email: akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Editor: Dimple Mehta
Published by Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist.- Gandhinagar.

© 2025, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

Price Per Copy: NIL

चलो खेलें...

नीचे दी हुई चीज़ों को उनकी संख्या के अनुसार ढूँढे।

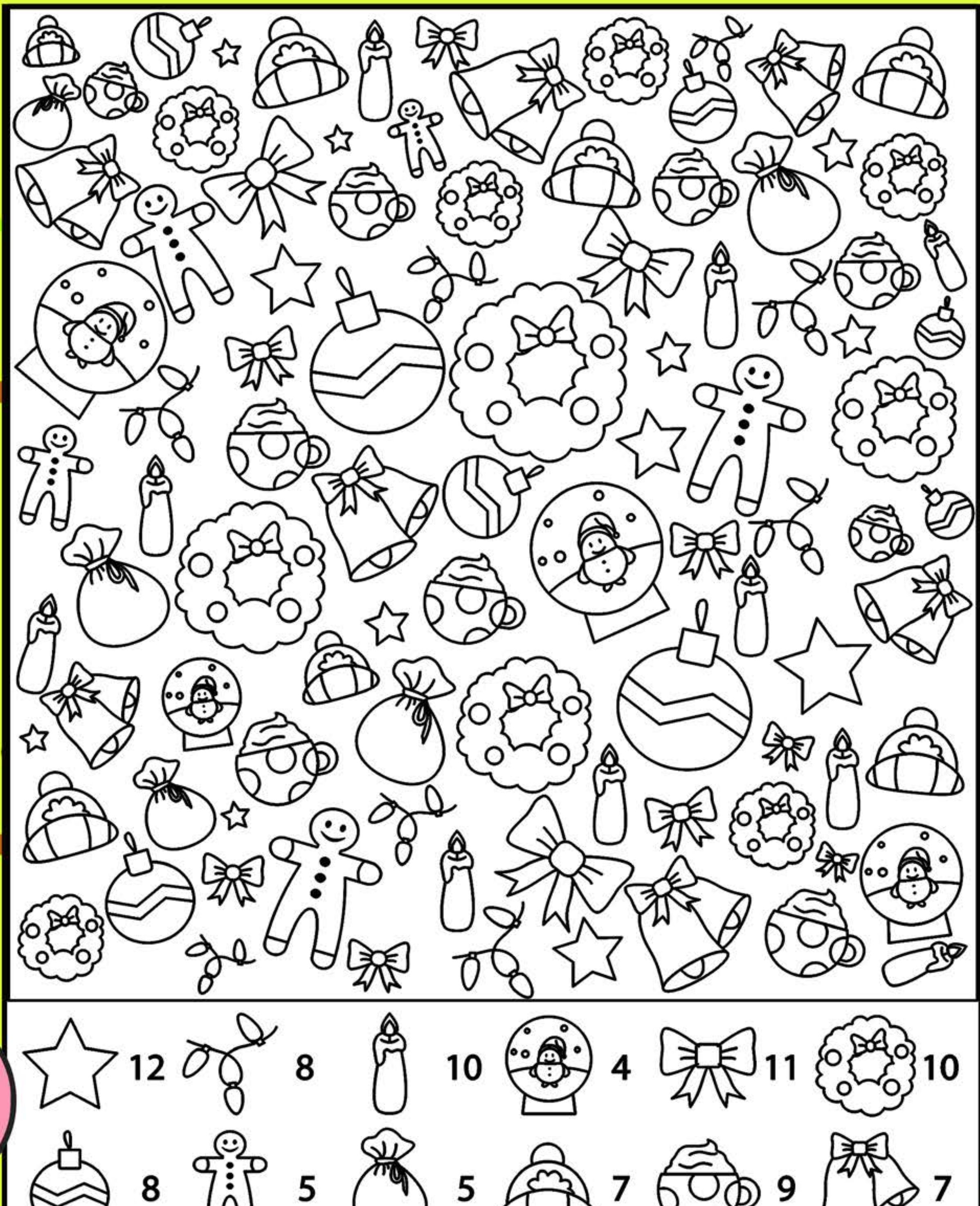

फन और फन फेयर

जिगर ने अपना सिर डेस्क पर रखा और धीरे से घड़ी की ओर देखा, 'आर्यन, मेरा मन कर रहा है कि मैं एकदम छोटी साइज़ का बन जाऊँ और घड़ी के काँटे पर बैठकर टाइम को आगे बढ़ा दूँ।'

सशश... आर्यन ने मुँह पर ऊँगली रखते हुए जिगर से कहा, 'मुझे सर की बात सुनने दो।'

'मान लो कि एक पिज़्ज़ा की कीमत दो-सौ रुपए है।' गणित के सर ने ब्लैक बॉर्ड पर लिखा। 'तो दो पिज़्ज़ा की कीमत बढ़ेगी या घटेगी?'

क्लास में सभी ने एक साथ कहा, 'बढ़ेगी!'

'सही कहा। और गाड़ी की स्पीड बढ़ती है तो पहुँचने का टाइम बढ़ेगा या घटेगा?'

'घटेगा!' फिर से सब एक साथ बोले।

'सही कहा।' सर ने कुछ और उदाहरण देकर गणित का फॉर्म्यूला समझाया। फिर होमवर्क के लिए दो सवाल बॉर्ड पर लिखे।

आर्यन तो सर द्वारा दिया गया होमवर्क करने में डूब गया।

'सर ने कल तक का टाइम दिया है न! जो काम कल किया जा सकता है, उसे आज क्यों करना? और अगर आज ही कर लिया तो कल क्या करना?' जिगर ने आर्यन से पूछा।

'यार, तुम्हें तो मैं क्या कहूँ!' आर्यन ने सिर हिलाते हुए कहा। थोड़ी देर में उसने जोर से कहा, 'जवाब मिल गया, सर!'

सर आर्यन के पास आए और उसके सवाल की जाँच की, 'शाबाश आर्यन, राइट आन्सर!'

जिगर को भी अपनी प्रशंसा सुनने का मन किया। उसने न ही कभी सर से 'शाबाश' सुना था और न ही कभी कोई काम समय से पहले पूरा किया था।

दोनों फ्रेन्ड्स ने अगले दिन जिगर के घर पर वीड़ियो गेम खेलने का प्लान बनाया।

'आर्यन, कितनी देर लगा दी! मैंने तो दो गेम फिनिश भी कर दिए।' जिगर चिढ़ते हुए बोला।

'म्यूज़िक की प्रैक्टिस बाकी थी। फिर कैसियो भाई को देना था।' आर्यन ने देर से आने का कारण बताया।

'म्यूज़िक में क्या मज़ा आता है? मुझे तो बोरिंग लगता है!' जिगर को अपने फ्रेन्ड के शौक समझ में नहीं आते थे।

'इसमें बोरिंग क्या है? तुम्हें गेम खेलने के अलावा सब कुछ

बोरिंग लगता है।' आर्यन ने कहा। तभी जिगर की मम्मी दोनों के लिए नाश्ता लेकर आईं।

नाश्ते की प्लेट में हाथ डालते हुए जिगर ने कहा, 'नहीं, सब कुछ नहीं। मुझे नाश्ता करने में कभी आलस नहीं आता।'

आर्यन हँसने लगा। "एक और चीज़ है, जिसमें शायद तुम्हें आलस नहीं आएगा। इस बार हमारी क्लास को 'फन फेर' करने का चान्स मिलने वाला है। मज़ा आएगा न?"

"बिल्कुल बोरिंग। इसमें क्या मज़ा आएगा? मुझे तो 'फन फेर' में खेलना पसंद है। लेकिन बाकी सारे काम...? ना बाबा ना, वह मेरा काम नहीं है।"

दूसरे दिन आर्यन को बहुत बड़ा सरप्राइज़ मिला। क्लास टीचर ने आर्यन को 'फन फेर लीडर' के रूप में सिलेक्ट किया। 'फन फेर' में कौन-कौन से गेम खेलने हैं, सब कुछ कैसे प्लानिंग

करना है आदि की ज़िम्मेदारी आर्यन को सौंपी गई। दूसरी भी छोटी-बड़ी टीम्स् बनाई गईं। जिगर का नाम मटीरीयल सप्लाइ टीम में था।

‘अरे यार, एकदम बोरिंग! यह कैसा काम है? सबको चीज़ें देते रहना? इसके बदले मुझे गेम्स या स्नैक्स की टीम में रखा होता तो!’ हमेशा की तरह जिगर को खुद को मिले हुए काम के बारे में सोच कर बोरियत महसूस हुई।

कुछ दिनों तक आर्यन गेम्स खेलने के लिए जिगर के घर भी नहीं जा पाया। वह बहुत मन लगाकर अपने काम में जुट गया। आर्यन को काम करते देख जिगर को कभी-कभी अकेलापन महसूस होता था। ‘आर्यन अपने काम को कितना एन्जॉय करता है। टीचर्स और स्ट्यूडेन्ट्स आर्यन से कितनी अच्छी तरह बात करते हैं। और मुझसे?!’

ऐसे करते-करते ‘फन फेर’ का दिन आ गया। दिनभर बड़ी दौड़-धूप रही। किसी ने आकर जिगर से कहा, “ये बॉल्स गिनकर कलर और शेप के अनुसार तैयार कर लो और ज़रूरत के अनुसार

गेम्स एरिया में भेज दो।"

जिगर को बॉल्स गिनने में आलस आ रहा था। उसने बिना गिने ही बॉल्स आगे भेज दी। कुछ देर बाद 'फन फेर' शुरू हुआ। सबको मजा करते हुए देखकर जिगर को भी खेलने का मन हुआ। उसने अपनी टीम के एक लड़के से कहा, "अब कुछ काम नहीं है। चलो, खेलने चलते हैं।"

तभी एक लड़की हाँफते हुए आई और कहा, "ये बॉल्स कम हैं। हमें गेम में प्रॉब्लम हो रही है। प्लीज, जल्दी से दूसरी बॉल्स दो।"

"ये बॉल्स किसने गिने थे?" किसी ने पूछा।

सभी ने जिगर की ओर देखा। वह घबरा गया। गिनने में आलस के कारण उसने बिना गिने ही बॉल्स भेज दी थी। किसी दूसरे गेम में उसने ज्यादा बॉल्स दे दी होंगी। अब क्या करें? और बॉल्स कहाँ से लाएँ?

टीम में से एक लड़के ने कहा "बाउन्सी बॉल' गेम में ज्यादा बॉल्स हैं। जाओ, वहाँ से ले आओ।"

जिगर दौड़ते हुए वहाँ से बॉल्स लेकर आया। तभी किसी और

की शिकायत आई कि उन्हें कलर और शेप की ज़रूरत के अनुसार बॉल्स नहीं मिली। जिगर को फिर से दौड़ना पड़ा। एक बार गिनने में आलस करने के कारण उसके पूरे दिन का मज़ा खराब हो गया। जब बाकी सब लोग एन्जॉय कर रहे थे उस समय जिगर पसीने से लथपथ होकर घबराकर इधर-उधर भाग रहा था।

दिन पूरा हुआ तो जिगर को कुछ राहत मिली। लेकिन वह अधिक देर टिक नहीं पाई। जिगर की टीम में से किसी ने आकर कहा, "जिगर, अब सब समेटने का काम करना है। सुबह से तुमने सभी कामों में गड़बड़ की है। अब यह काम ठीक से करना।"

एक तरफ जिगर को डाँट पड़ रही थी, तो दूसरी तरफ आर्यन की वाहवाही हो रही थी। जिगर की उकताहट की कोई सीमा नहीं रही। 'अब सब कुछ फिर से गिन-गिन कर पैक करना है, मैं कैसे करूँगा? मैं यहाँ से भाग जाना चाहता हूँ।'

जिगर निराश होकर बैठा था। तभी आर्यन उसके पास आया।

“अरे आर्यन, तुम? यहाँ क्या कर रहे हो?” जगर ने रुआँसी आवाज़ में पूछा।

“तुम्हारी हेल्प करने आया हूँ। चलो, दोनों मिलकर फटाफट तुम्हारा काम खत्म करते है”, ऐसा कहकर आर्यन बॉल्स को बॉक्स में रखने लगा। जिगर आर्यन को देखता ही रह गया, “आर्यन, सब तुम्हारे साथ अभी आइस्क्रीम पार्टी करना च ाहते हैं और तुम मेरे पास आए हो? तुम्हें मेरे साथ काम करने में बोरियत नहीं होगी?”

“जिगर, काम की वैल्यू समझें तो इन्ट्रेस्ट आता है और जिसमें इन्ट्रेस्ट आता है, उसमें कभी आलस नहीं आता।” आर्यन ने बॉल्स गिनते हुए कहा।

“लेकिन मुझे बॉल्स गिनने का काम दिया था। इस काम की क्या वैल्यू हो सकती है?” जिगर ने दलील दी।

“अगर तुमने ठीक से बॉल्स गिन कर दी होती, तो गेम खिलाने वाले को कोई परेशानी नहीं हुई होती। तुम्हें भी आखिरी

समय भागदौड़ नहीं करनी पड़ती और सब को मज़ा आता।" मानो आर्यन के पास जवाब तैयार ही था।

जिगर कुछ नहीं बोला। आर्यन काम करने में मशगूल था।

"लेकिन तुम्हें अभी मेरे साथ काम करने में बोरियत क्यों नहीं हो रही?" जिगर को समझ में नहीं आ रहा था, "यह काम तो तुम्हारा है भी नहीं।"

"क्योंकि मैं अपने फ्रेन्ड की हेल्प कर रहा हूँ! इस काम की वैल्यू तो मुझे पता ही होगी न!"

जिगर को आर्यन की बात स्पर्श कर गई। उसे पहली बार समझ में आया कि उसके फ्रेन्ड को किसी भी काम में बोरियत क्यों नहीं होती। वह हमेशा प्रत्येक काम की वैल्यू समझता है। जिगर के चेहरे पर अचानक स्माइल आ गई। यह देखकर आर्यन ने पूछा, "क्या हुआ? क्यों हँस रहे हो?"

"काम में इन्ट्रेस्ट बढ़ेगा तो आलस अपने आप चला जाएगा!" जिगर ने कहा।

"और काम की वैल्यू बढ़ेगी तो काम में इन्ट्रेस्ट भी बढ़ेगा!" आर्यन बोला।

दोनों फ्रेन्ड्स हँस पड़े।

ज्ञानी कहते हैं...

प्रश्नकर्ता : हमें आलस क्यों आता है?

नीरू माँ : खाते समय आलस आता है? सोने में आलस आता है?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

नीरू माँ : यह तो क्या है कि कोई पढ़ाई करने के लिए कहता है तो आलस आता है। खेलने के लिए कहेगा को आलस नहीं आएगा। इसलिए जो काम करना आपको पसंद नहीं है उसे करने में आलस आता है, बोरियत महसूस होती है।

प्रश्नकर्ता : आलस को दूर भगाने के लिए क्या करना चाहिए?

नीरू माँ : यदि किसी काम में आपको इन्ट्रेस्ट हो तो क्या आपको आलस आता है? अर्थात् आपको इन्ट्ररेस्ट जगाना होगा। जिन कामों

को करने में आपको आलस आता है या बोरियत महसूस होती है उन्हें करने के लिए आपको इन्ट्रेस्ट जगाना होगा। इसे समझो। इन्ट्रेस्ट कब आता है? आपको इस काम से क्या फायदा है? भविष्य में इस काम से क्या फायदा होगा? यह समझोगे तो इन्ट्रेस्ट आएगा। चाहे कितनी भी देर तक क्रिकेट देखा हो लेकिन सिर्फ़ उतनी देर तक ही खुशी मिलती है। फिर सब वैसा का वैसा। और यहाँ तो आप पढ़ाई करो तो आपको अच्छे मार्क्स मिलेंगे, आपका करियर बनेगा और भविष्य में आप एक अच्छे डॉक्टर, इंजीनियर बन सकते हो और लोगों की भी मदद कर सकते हो।

आलस करने से आप जीवन में मिलने वाले अच्छे अवसरों को खो देते हो। इसलिए आप पढ़ाई करने में आलस मत करना, क्रिकेट देखने और टी.वी देखने में आलस करना, हं।

'काम नहीं करना है' ऐसा कहोगे तो अपने आप आलस आएगा और 'करना है' कहोगे तो आलस दूर भाग जाएगा। दादा भगवान से शक्ति भी माँग सकते हो, 'मुझे आलस दूर करने की शक्ति दीजिए।'

यह तो नई ही बात !

प्रश्नकर्ता : मुझे सुबह-सुबह बहुत आलस आता है। उठ जाता हूँ, लेकिन उठने के बाद बिस्तर पर पड़ा रहता हूँ। इसलिए मम्मी गुस्सा करती है।

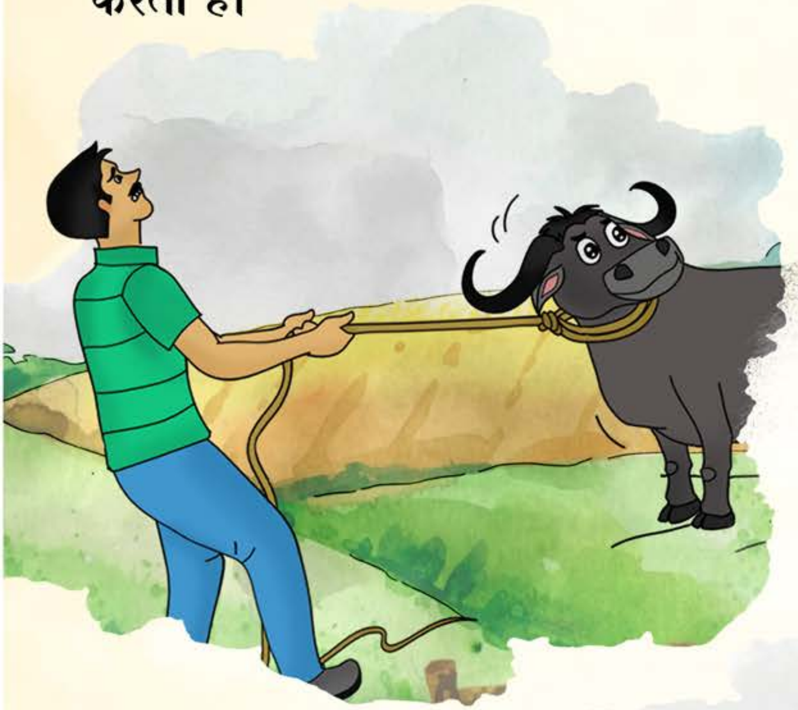

पूज्यश्री : एक भैंस थी। वह बीमार थी। उसे दवाखाने ले जाना था। भैंस को ट्रक में चढ़ाने के लिए लकड़ी का पटिया रखा गया। लेकिन भैंस ट्रक में चढ़ ही नहीं रही थी।

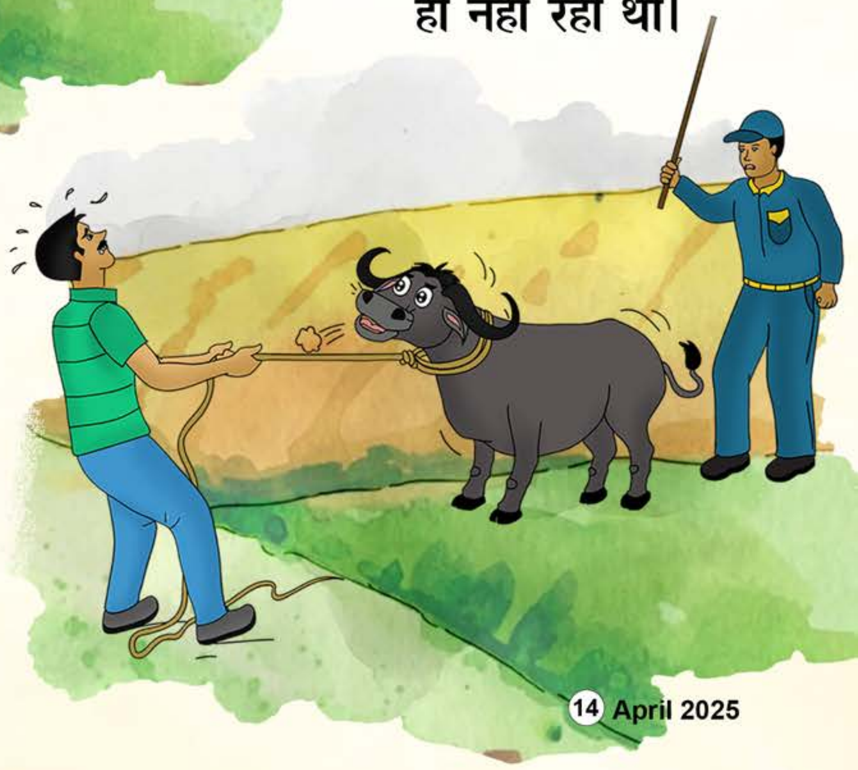

लोग उसे लकड़ी से मारने लगे। लेकिन भैंस मान ही नहीं रही थी। उसने जोर-जोर से रंभाना शुरू कर दिया।

अंत में लोगों ने उसे धक्का मार कर ट्रक पर चढ़ा दिया और दवाखाने ले गए।

वहाँ उसे दवाई दी और वह ठीक हो गई।

तुम भैंस हो या मनुष्य? वह भैंस मार खाने के बाद ट्रक में चढ़ी थी। तुमको उठाने के लिए मम्मी को तुम पर गुस्सा करना पड़ता है तब तुम उठते हो। इससे तो अच्छे बच्चे की तरह जल्दी उठ जाओ वह ठीक रहेगा या नहीं? वैसे भी आधे घंटे बाद तो उठना ही है न!

मीठी यादें...

नीचे एक आप्तपुत्र भाई के साथ घटी दिल को छू लेने वाली घटना बताई गई है। आइए उसके बारे में उन्हीं के शब्दों में जानें।

यह उस समय की बात है जब हमारी संस्था में कम्प्यूटर नया-नया आया था। मुझे ग्राफ़िक्स का काम दिया गया। पहले मुझे ग्राफ़िक्स का काम नहीं आता था। लेकिन जब मुझे काम सौंपा गया तो खुद ही सीखना शुरू कर दिया और करते-करते मैं बहुत कुछ सीख गया।

दादा की एक किताब छपने वाली थी। एक तरफ नीरू माँ और दीपकभाई किताब का काम करते और दूसरी तरफ हम ग्राफ़िक्स का। नीरू माँ और दीपकभाई के साथ बहुत सारी बातें होतीं। कुछ भी काम करते तो उनके पास ले जाते। वे देखते और जहाँ आवश्यक होता वहाँ सुझाव देते।

एक ग्राफ़िक के लिए दीपकभाई हमेशा कहते, 'इस तरह बनाओगे तो अच्छा लगेगा। तुम्हें समझ में आ रहा है?'

मैं 'हाँ' कहता और फिर से वही गलती कर बैठता। दूसरी बार जब मैं उनके पास लेकर जाता तो वे गलती देखकर कहते, 'देखो, इस ग्राफ़िक को इस तरह से बनाओगे तो बहुत अच्छा लगेगा। तुम्हें क्या लगता है?' मैं उनसे कहता, 'हाँ दीपकभाई, आपने मुझे लास्ट टाइम कहा था लेकिन मैं भूल गया।'

एक ही गलती दस बार करते तो भी नीरू माँ और दीपकभाई कभी ऐसा नहीं कहते कि 'तुम समझते ही नहीं हो। मैंने तुम्हें लास्ट टाइम कहा था न।'

उनके ऐसे प्रेम के कारण गलती को सुधारना ही पड़ता। गलती तो सुधर जाती है लेकिन साथ-साथ यह भी सीखने को मिलता है कि दूसरों की गलती देखे बिना किस तरह प्रेम से काम करना चाहिए।

चलो खेलें...

नीचे दिए गए राउन्ड्स में अपनी कल्पना से चित्र बनाएँ।

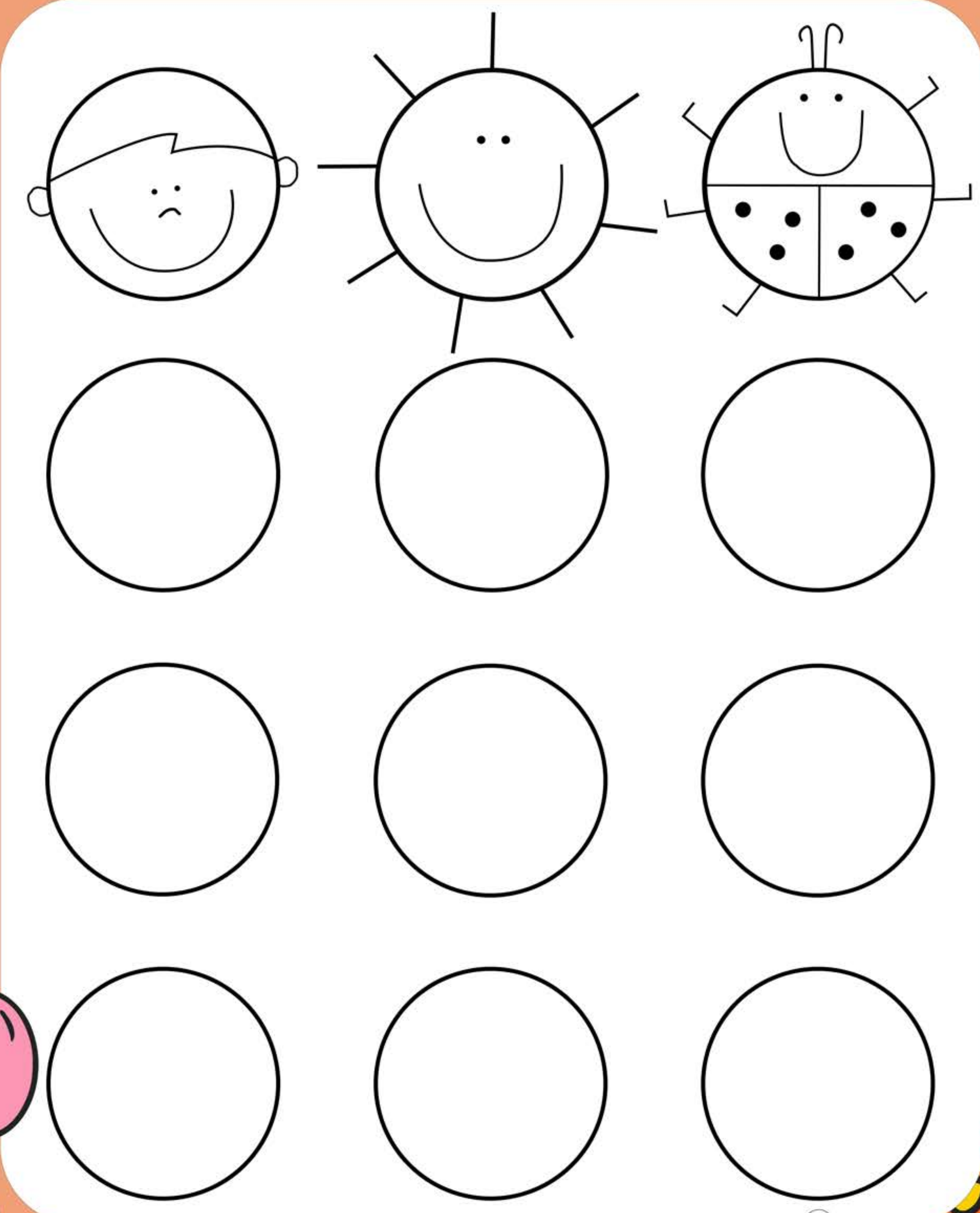

चलो खेलें...

कलर करके डोरी का छोर ढूँढे।

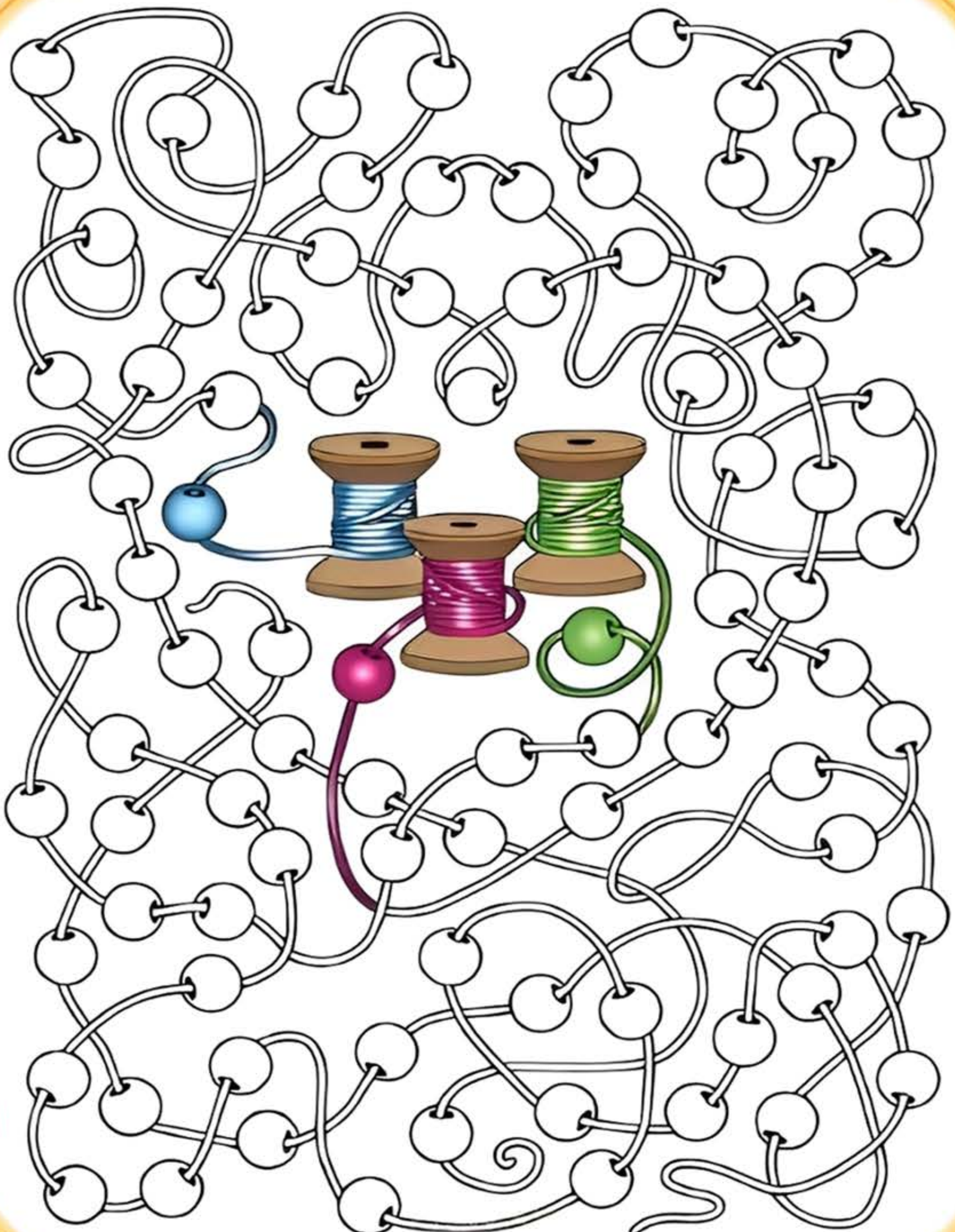

'बाद में' कब आएगा ?

विन्की ने एक बड़ी सी उबासी ली और रोज़ की तरह अलार्म बंद करके सो गया। विन्की की बहन ने उस पर ठंडा-ठंडा पानी डालकर उसे जबरदस्ती उठाया, “कुंभकर्ण, आज फिर से मुझे स्कूल बस मिस नहीं करनी है। जल्दी उठो।” विन्की बड़बड़ाया, “सूरजदादा, आप भी थोड़ा लेट उठे होते तो।”

जोली सर हमेशा की तरह एकदम जॉली मूड में थे। क्लास खत्म होते ही उन्होंने एक घोषणा की, “सोमवार को सभी अपने घर से एक चीज़ बनाकर लाना। क्लास में यह बताना होगा कि आपने वह चीज़ क्यों बनाई है और उसका महत्त्व क्या है।”

क्लास के बाद सभी एक-दूसरे के साथ डिस्कस करने लगे कि वे क्या बनाएँगे। विन्की बैठे-बैठे एक पज़ल सॉल्व कर रहा था। “विन्की, तुम क्या बनाओगे? तुमने कुछ सोचा?” कोली ने पूछा। “अभी से क्या सोचना? तुम्हें तो मेरा मंत्र पता ही है न! आज करो सो कल, कल करो सो परसों इतनी भी क्या जल्दी है, जब जीना है बरसों!”

“तुम तो स्मार्ट हो, विन्की! तुम तो आख़िरी समय पर सोचकर भी कुछ गज़ब का बनाकर लाओगे। लेकिन मुझे तो आज से ही काम शुरू करना पड़ेगा।” कोली ने कहा। और वाकई में ऐसा ही हुआ। रविवार शाम तक विन्की ने कुछ भी नहीं किया था। देर रात बैठकर उसने एक पेपर प्लेन बनाया। सोमवार को विन्की का प्रेज़न्टेशन सूपरहिट रहा।

क्लास में ऐसा कहा जाता था कि कोई भी कठिन काम हो तो विन्की को करने दे दो। विन्की इतना आलसी है कि वह कठिन काम को भी आसान बनाने का उपाय ढूँढ़ निकालेगा। प्रेज़न्टेशन के बाद जोली सर ने भी विन्की की बहुत तारीफ की। विन्की के रिपोर्ट कार्ड में सर ने लिखा, 'विन्की बहुत होशियार है। लेकिन उसे मेहनत का महत्व समझने की ज़रूरत है।'

विन्की की मम्मी ने विन्की को टोका, "देखा? सर भी तुम्हें मेहनत करने के लिए कहते हैं। हर काम में कहते हो, 'बाद में करूँगा।' लेकिन तुम्हारा 'बाद में' कभी आता ही नहीं! जो काम बाद में करना ही है, वह काम तुम पहले पूरा कर दो तो तुम्हें कितनी शांति रहेगी और मुझे भी।"

"लेकिन मम्मी, आपने असली बात तो पढ़ी ही नहीं! उन्होंने कहा है कि मैं बहुत 'होशियार' हूँ।" विन्की बोला। और फिर स्टाइल मारते हुए कहा, "सफलता मेहनत करने से नहीं, बल्कि सही जगह मेहनत करने से मिलती है!"

परीक्षाएँ खत्म हुईं। आख़िरी दिन नोटिस बोर्ड पर एक फ्लायर लगा हुआ था, 'जीतो फैन्टसी राइड।' जोली सर ने क्लास में कहा, "एक स्पर्धा का आयोजन किया गया है। हमें एक साइन्स मॉडल बनाकर भेजना है। जो टीम स्पर्धा में जीतेगी उन्हें 'फेन्टसी राइड' पर जाने का चान्स मिलेगा। विन्की, कोली और बेन्जी को इस टीम के लिए चुना गया है...।"

विन्की, कोली और बेन्जी बहुत खुश हुए। तीनों ने 'सौर मण्डल' का मॉडल बनाने का निर्णय लिया। "हम इतना बढ़िया मॉडल बनाएँगे कि प्राइज़ हमें ही मिलेगा। फैन्टसी राइड में कितना मज़ा आएगा न!" बेन्जी बोला।

"हाँ, हम बहुत मेहनत करेंगे।" कोली ने कहा।

कोली सौर मण्डल पर एक रिपोर्ट लिखने वाला था, बेन्जी ड्रॉइंग्स बनाने वाला था और विन्की मॉडल बनाने वाला था। कोली और बेन्जी ने कुछ ही दिनों में अपने-अपने काम पूरे भी कर लिए।

बेन्जी और कोली रोज़ विन्की से पूछते, “विन्की, क्या तुम्हें मॉडल बनाने में हमारी हेल्प की ज़रूरत है?” परन्तु विन्की मना कर देता। “मैं आराम से कर दूँगा। ये सभी मॉडल्स बनाना तो मेरे लेफ्ट हैन्ड का काम है!”

अगले दिन सबमिशन था और हर बार की तरह विन्की एक दिन पहले रात को काम करने बैठा। आधा काम हुआ था और तभी लाइट बंद हो गई।

विन्की इमरजन्सी लाइट लेकर बैठा, लेकिन वह चालू ही नहीं हुई। "मम्मी ने कहा था न। लेकिन 'बाद में-बाद में' के चक्कर में उसने लाईट चार्ज नहीं की थी। विन्की को पहली बार पछतावा हुआ, 'मैंने आलस किए बिना लाइट चार्ज कर दी होती तो!' लेकिन अब क्या!

वह डरते-डरते कोली के घर गया और फोन करके बेन्जी को भी वहाँ बुला लिया। उसने पूरी बात बताई। वह बोला, "सॉरी फ्रेन्ड्स, मेरी वजह से तुम्हारा भी फैन्टसी राइड का चान्स मिस हो जाएगा। काश! मैंने भी तुम्हारी तरह पहले से ही काम शुरू कर दिया होता।"

कोली ने कहा, "अभी भी देर नहीं हुई है। शुरुआत को तो बदला नहीं जा सकेगा, लेकिन हम मेहनत करके एन्ड ज़रूर बदल डालेंगे।" रात को तीनों ने मिलकर मॉडल बनाया।

विन्की बहुत शर्मिंदा हुआ। उसने तय किया कि जो काम बाद में करना ही है, उसे पहले ही पूरा करने में आलस नहीं करेगा। यह तो पता नहीं कि तीनों को 'फैन्टसी राइड' पर जाने का चान्स मिला या नहीं लेकिन इतना पता है कि विन्की को यह समझ में आ गया कि मेहनत की सीढ़ी के बिना सफलता की राइड पर चढ़ने नहीं मिलेगा।

कॉम्पिटिशन से पहले आलू ने कोको से कहा कि 'तुम ज़रूर जीतोगे...' इसलिए चिली ने आख़िरी वक़्त में अपना सॉन्ग बदल दिया और हर कोई उसके पर्फारमेन्स पर बहुत हँसा। अब देखते हैं कि चिली को आगे क्या कहना है...

आलू ऐसा क्यों करता है? वह मेरा फ्रेन्ड है या कोको का...? मेरे सॉन्ग पर सब लोग कितना हँसे। लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। जब उसे स्केटिंग करना नहीं आता था और सब उसे परेशान करते थे, तब मैं उसके लिए हर किसी से लड़ जाता था और वह? वह तो मेरे बजाय कोको की साइड लेता है। ऐसा लग रहा है कि मेरी तबियत भी बिगड़ गई है। इतना गरम-गरम लग रहा है कि मेरे पंख भी जल रहे हैं।

मुझे लगा कि अब मुझे आइस्क्रीम खानी ही पड़ेगी। मैंने फ्रिज खोला। आइस्क्रीम निकालकर खाने ही वाला था कि तभी मुझे पार्सली की कर्कश आवाज़ सुनाई दी। मुझे पता था कि मेरे पीछे आलू और उसका चमचा पार्सली आ ही जाएँगे। मैंने पीछ मुड़कर देखा तो पार्सली अकेला ही था। आलू कहीं दिखाई नहीं दिया। इसलिए मैंने पार्सली से पूछा, "कहाँ हैं तुम्हारे आलू भाई? वहाँ तो बहुत 'कोको-कोको' कर रहे थे!"

पार्सली ने कहा, "कोको का सॉन्ग स्टार्ट हो गया है! कोको को उनके सपोर्ट की ज़रूरत है। इसलिए वे वहीं हैं!" उसकी बात सुनकर मुझे इतना गरम-गरम लगा कि मानो मैं गरम तेल में गिर गया हूँ। मैंने तो उससे कह दिया, "तो तुम यहाँ क्यों आए हो? तुम्हें भी वहीं रहना था न!" पार्सली ने कहा "चिली, तुम मेरी बात सुनो। मैंने आलू भाई और कोको को बात करते हुए सुना है। मैं तुम्हें समझाता हूँ कि आलू भाई क्यों..." कोको का नाम सुनकर मुझे फिर से वह बात याद आ गई। आलू मेरा बेस्ट फ्रेन्ड है। फिर भी उसने कोको से कहा कि 'कोको, तुम अच्छा गाना। तुम ज़रूर जीतोगे!'

मैं अब बस यहाँ से कहीं चला जाना चाहता हूँ। लेकिन मैं जहाँ जाऊँगा वहाँ पार्सली मेरे पीछे आएगा। उससे पीछा छुड़ाने के लिए मैंने उससे कहा, फ्रिज में जो 'चिली शेक' रखा है, वह तो मैं ही पीने वाला हूँ! और 'चिली शेक' का नाम सुनते ही पार्सली सब कुछ भूलकर सीधे फ्रिज की ओर भागा।

जैसे ही पार्सली अंदर गया, मैं तुरंत ही वहाँ से उड़कर बाहर आ गया। ठंडी हवा में भी अच्छा नहीं लगा। बस, अब थीओ के कैफे में जाकर कुछ ठंडा पीऊँगा तो मुझे अच्छा लगेगा!! ऐसा सोचकर मैं थीओ के कैफे पर गया। ऊपर आकाश से नीचे कैफे की ओर देखा तो मुझे एकदम शांति महसूस होने लगी!

चिली को इतनी जलन क्यों हो रही थी? और उसने थीओ के कैफे में ऐसा क्या देखा कि उसे एकदम शांति हो गई?

Summer Camp

बालकों के लिए संस्कार सिंचन शिविर
वर्ष २०२५

Center	4 to 7 Yrs. Date	4 to 7 Yrs. Contact No.	8 to 12 Yrs. Date	8 to 12 Yrs. Contact No.
Sim city	13 April	9313665562	20 April	9313665562
Ahmedabad	30-March 19-April	8160628473	23 March 20, 21 April	9925094049
Amreli	-	-	27 April	9408898792
Baroda	20 April	9712981515	8 June	9998008435
Bharuch	-	-	27 April	8320710688
Bhavnagar	6 April	9409467181	18 May	9558860259
Bhuj	20 April	8401739612	27 April	9408246480
Dhoraji	-	-	20 April	9574046082
Gandhidham	-	-	20 April	9428310787
Jamnagar	20 April	9723147318	27 April	9723147318
Junagath	-	-	18 May	7984313397
Mehsana	18 April	8469264605	27 April	9427650382
Morbi	18 April	9725199144	27 April	9978633035
Mumbai	Borivali - 12 April Mulund - 12 April Ghatkopar- 13 April	8652890066	12, 13 April	9820161710
Rajkot	20 April	8849043362	18 May	7779023726
Surat	30, 31 March	9825233559	20 April	9574008498
Vijapur	-	-	4 May	8141461682
Veraval	31 March	8980483683	16 May	9712191887

१ समर कैम्प में हिस्सा लेने के लिए आपके नज़दीक के सेन्टर में रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। रजिस्ट्रेशन चार्ज नॉनरिफंडेबल है।

२. बालक की उम्र और कक्षा के आधार पर किए गए वर्गीकरण के अनुसार जो तारिख तय की गई है उस अनुसार रजिस्ट्रेशन किया जाएगा। जिस कैम्प के लिए रजिस्ट्रेशन करवाना है उस कैम्प की तारीख के ५ दिन पहले रजिस्ट्रेशन बंद कर दिया जाएगा। उसके बाद रजिस्ट्रेशन करवाने के लिए तत्काल चार्ज लिया जाएगा।

३. सीमंधर सिटी समर कैम्प के लिए रजिस्ट्रेशन त्रिमंदिर संकुल के 'स्टोर ऑफ हैपीनेस' में शाम ५:०० से ६:३० बजे के स्वयं आकर जिस कैम्प के लिए रजिस्ट्रेशन करवाना है उसके पाँच दिन पहले तक हो पाएगा। यह रजिस्ट्रेशन २२ मार्च से शुरू किया जाएगा। संपर्क सूत्र : ९३१३६६५५६२

अधिक जानकारी के लिए यहाँ क्लिक करें।

For BMHT
https://shorturl.at/aD2uS

For LMHT
https://shorturl.at/3VQ0i